नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत - इजराइल संबंध नई ऊंचाईयों पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बुधवार को इज़राइल की संसद नेसेट में दिया गया संबोधन केवल एक कूटनीतिक औपचारिकता नहीं था, बल्कि यह दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच विकसित होते रणनीतिक विश्वास का सार्वजनिक उद्घोष था. इज़राइली संसद को संबोधित करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बनकर मोदी ने इतिहास के पन्नों में एक नया अध्याय जोड़ा है. यह क्षण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पश्चिम एशिया आज अस्थिरता, युद्ध और वैचारिक ध्रुवीकरण के दौर से गुजर रहा है.

अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने 7 अक्टूबर 2023 के हमलों को 'बर्बर' बताते हुए स्पष्ट शब्दों में आतंकवाद की निंदा की. भारत की 'जीरो टॉलरेंस' नीति का उल्लेख करते हुए उन्होंने 26/11 मुंबई हमलों की पीड़ा को याद किया. यह संदर्भ केवल सहानुभूति का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि यह संदेश भी था कि आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई साझा है और इसका कोई नैतिक औचित्य नहीं हो सकता. नागरिकों की हत्या को किसी भी उद्देश्य से उचित नहीं ठहराया जा सकता, यह भारत की स्थायी नीति रही है. ऐसे समय में जब वैश्विक राजनीति में दोहरे मानदंडों के आरोप लगते रहते हैं, भारत का यह स्पष्ट रुख उसे विश्वसनीय भागीदार बनाता है.

नेसेट के अध्यक्ष आमिर ओहाना द्वारा प्रधानमंत्री को 'मेडल ऑफ द नेसेट' से सम्मानित किया जाना इस बात का प्रतीक है कि इज़राइल भारत को केवल एक बाजार या सामरिक सहयोगी नहीं, बल्कि भरोसेमंद मित्र के रूप में देखता है. यह सम्मान व्यक्तिगत नहीं, बल्कि भारत-इज़राइल संबंधों की परिपक्वता का सम्मान है. पिछले एक दशक में रक्षा, कृषि, जल प्रबंधन, साइबर सुरक्षा और स्टार्टअप नवाचार जैसे क्षेत्रों में सहयोग उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है. अब यह साझेदारी सामरिक सीमाओं से आगे बढ़कर सामाजिक और तकनीकी आयामों को भी छू रही है.

प्रधानमंत्री द्वारा साझा किया गया वह भावुक तथ्य कि उनका जन्म उसी दिन हुआ था जब भारत ने इज़राइल को मान्यता दी, प्रतीकात्मक राजनीति का सशक्त उदाहरण था. यह संदेश व्यक्तिगत जुड़ाव से अधिक ऐतिहासिक निरंतरता का संकेत था. 1950 में मान्यता देने के बाद लंबे समय तक दोनों देशों के संबंध औपचारिक और सीमित रहे. किंतु 1992 में पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित होने के बाद और विशेषकर पिछले दशक में, यह संबंध खुलकर सामने आया है. हालांकि, इस मित्रता का अर्थ क्षेत्रीय संतुलन को नजरअंदाज करना नहीं है. प्रधानमंत्री ने 'गाजा शांति पहल' का समर्थन करते हुए स्पष्ट किया कि भारत स्थायी शांति के लिए संवाद और कूटनीति का पक्षधर है. भारत का यह संतुलित रुख उसे पश्चिम एशिया में एक विश्वसनीय और स्वीकार्य शक्ति बनाता है. वह इज़राइल के साथ गहरे संबंध रखता है, तो वहीं अरब देशों और फिलिस्तीन के साथ भी ऐतिहासिक जुड़ाव बनाए हुए है.

सभ्यताओं के स्तर पर 'वसुधैव कुटुंबकम' और 'टिक्कुन ओलम' के बीच समानता रेखांकित कर प्रधानमंत्री ने यह संकेत दिया कि भारत-इज़राइल संबंध केवल रणनीतिक समीकरण नहीं, बल्कि साझा मूल्यों पर आधारित साझेदारी हैं. एक ओर इज़राइल की नवाचार क्षमता है, दूसरी ओर भारत की विशाल अर्थव्यवस्था और युवा शक्ति. यदि दोनों मिलकर जल, कृषि, रक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में दीर्घकालिक योजनाएं बनाते हैं, तो यह साझेदारी वैश्विक दक्षिण के लिए भी एक मॉडल बन सकती है.

नेसेट में मोदी का संबोधन इसलिए ऐतिहासिक है क्योंकि यह केवल वर्तमान की जरूरतों का उत्तर नहीं देता, बल्कि भविष्य की दिशा भी तय करता है. यह संदेश स्पष्ट है कि भारत अब वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ अपने मित्रों के साथ खड़ा है, परंतु संतुलन और शांति की अपनी परंपरा को भी नहीं छोड़ता. यही परिपक्व कूटनीति भारत-इज़राइल संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है.

नानाजी ने राष्ट्रोदय की संकल्पना की साकार

सुरेन्द्र शर्मा
भारतीय जनता पार्टी प्रदेश उपाध्यक्ष मध्यप्रदेश

मेरा जीवन अपने लिए नहीं अपनों के लिए है अपने वे हैं जो दु:खी शोषित और पीड़ित हैं. नानाजी देशमुख के यह वाक्य केवल उनके ही जीवन का ध्येय वाक्य नहीं था, बल्कि उनके पदचिन्हों पर चलकर हजारों लोगों ने मानवता की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया, जिसका परिणाम आज चित्रकूट गोंडा और अन्य जिलों में देखा जा सकता है. नानाजी देशमुख का नाम भारतीय सार्वजनिक जीवन में एक ऐसे कर्मयोगी के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने राजनीति को समाजसेवा का माध्यम बनाया और बाद में सक्रिय राजनीति छोड़कर पूर्णकालिक ग्रामोदय के कार्य में स्वयं को समर्पित कर दिया. उनका जीवन सादगी, राष्ट्रभक्ति, संगठन कौशल और ग्राम विकास की प्रयोगधर्मिता का अद्भुत संगम था. वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी समाज सुधारक और चिंतक थे.

नानाजी देशमुख का जन्म 11 अक्टूबर 1916 को महाराष्ट्र के परभणी जिले के कडोली गांव में हुआ. उनका वास्तविक नाम चंडिकादास अमृतराव देशमुख था. बाल्यकाल से ही वे परिश्रमी, आत्मनिर्भर और राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत थे. आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और युवावस्था में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए. संघ के स्वयंसेवक के रूप में उन्होंने संगठनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उत्तर प्रदेश में संघ के विस्तार में विशेष योगदान दिया. नानाजी भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे. उन्होंने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने के लिए निरंतर परिश्रम किया. वे उत्तर प्रदेश में जनसंघ के प्रमुख रणनीतिकार माने जाते थे. उनकी कुशल रणनीति के कारण 1967 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को कड़ी चुनौती मिली और कई राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं.

पुण्यतिथि पर विशेष

1975 में जब देश में आपातकाल लगाया गया, तब नानाजी देशमुख लोकतंत्र की रक्षा के लिए सक्रिय रहे. उन्होंने भूमिगत रहकर विरोध आंदोलन को संगठित किया. आपातकाल के विरुद्ध जनांदोलन में उनका योगदान महत्वपूर्ण था.

बाद में वे जनता पार्टी के गठन में भी सक्रिय रहे और 1977 में लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए. सक्रिय राजनीति में ऊंचे पदों तक पहुंचने के बावजूद नानाजी देशमुख ने 60 वर्ष की आयु में राजनीति से संन्यास लेने का निर्णय लिया. उनका मानना था कि सत्ता से अधिक महत्वपूर्ण समाज का पुनर्निर्माण है. उन्होंने स्वयं को ग्रामीण विकास के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया. नानाजी देशमुख ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' के सिद्धांत को व्यवहार में उतारने का प्रयास किया. उनके अनुसार विकास का केंद्र गांव होना चाहिए, क्योंकि भारत की आत्मा गांवों में बसती है. इसी उद्देश्य से उन्होंने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट क्षेत्र को अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुना. नानाजी देशमुख का नाम भारतीय जनसंघ के प्रमुख संगठनकर्ताओं और रणनीतिकारों में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है. वे उन नेताओं में थे जिन्होंने जनसंघ को जमीनी स्तर पर मजबूत किया और उसे एक वैकल्पिक राष्ट्रीय राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

> नानाजी देशमुख भारतीय सार्वजनिक जीवन के ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने ग्राम विकास को अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बना लिया. उनका विश्वास था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और जब तक गांव आत्मनिर्भर, शिक्षित और समृद्ध नहीं होंगे, तब तक देश का समग्र विकास संभव नहीं है. राजनीति के उच्च शिखर पर पहुंचने के बाद भी उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास लेकर स्वयं को पूर्णत: ग्रामोदय (गांवों के समग्र विकास) के कार्य में समर्पित कर दिया. नानाजी देशमुख ने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट क्षेत्र को अपने ग्राम विकास कार्यों की प्रयोगभूमि बनाया. यह क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ा, सूखा प्रभावित और संसाधनों की कमी से जूझ रहा था. उन्होंने यहां के लगभग 500 गांवों को विकसित करने का लक्ष्य रखा. उन्होंने 1968 में स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से समग्र ग्राम विकास की योजना लागू की. इस संस्थान का उद्देश्य था—गांवों को आत्मनिर्भर, शिक्षित, स्वस्थ और संगठित बनाना. नानाजी देशमुख ने ग्राम विकास को केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं रखा. उन्होंने समग्र ग्राम विकास का मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें पांच प्रमुख आयाम थे- शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन (रोजगार), सामाजिक समरसता, सतत कृषि और जल संरक्षण. उनका मानना था कि यदि इन सभी क्षेत्रों में एक साथ कार्य किया जाए, तभी स्थायी परिवर्तन संभव है. नानाजी देशमुख का विश्वास था कि शिक्षा ही विकास की कुंजी है. उन्होंने चित्रकूट में विद्यालयों, बाल संस्कार केंद्रों और तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की ग्रामीण बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था की गई.

रूस-यूक्रेन युद्ध के 4 साल पूर्ण

रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध को 24 फरवरी को 4 वर्ष पूरे हो गए. दोनों पक्षों के जन-धन की भारी क्षति और भीषण बर्बादी के बाद भी यह युद्ध अब तक जारी है और कब खत्म होगा, कहा नहीं जा सकता. इस युद्ध ने 1,417 दिनों तक चले द्वितीय विश्वयुद्ध को पीछे छोड़ दिया. रूस ने इस युद्ध की शुरूआत 3 उद्देश्यों से की थी. वह यूक्रेन को नाटो में शामिल होने से रोकना चाहता था. उसे डोनबास क्षेत्र में रूसी भाषा बोलने वाले लोगों की रक्षा करनी थी तथा यूक्रेन में जेलेंस्की को हटाकर अपनी मर्जी की सरकार लानी थी. रूस को उम्मीद थी कि युद्ध से घबराकर जलेंस्की जल्दी ही आत्मसमर्पण कर देगा लेकिन उसका यह अनुमान सही नहीं निकला. यूरोपीय देशों की मदद से जेलेंस्की ने लड़ाई जारी रखी. यूक्रेन तो नाटो में शामिल नहीं हो पाया लेकिन इस दौरान उस सैनिक संधि में स्वीडन और फिनलैंड जैसे तटस्थ स्कैंडिनेवियन देश शामिल हो गए. इसलिए रूस की असुरक्षा में कोई कमी नहीं आई. रूस इस युद्ध में कामयाबी का इसलिए दावा कर सकता है क्योंकि उसने यूक्रेन के 20 प्रतिशत क्षेत्र पर कब्जा कर लिया है. रूस को बड़ा नुकसान इसलिए हुआ कि उसके सैनिक बड़ी तादाद में मारे गए. यहां तक कि रूसी सेना में जबरन भर्ती कर मोर्चे पर भेजे गए कुछ भारतीय व नेपाली गोरखा भी मारे गए. द्वितीय विश्वयुद्ध में भी रूस की पुरुष आबादी बड़ी तादाद में मारी गई थी जिस वजह से ट्रक और ट्रैक्टर चलाने का काम महिलाओं के जिम्मे आ गया था. यूरोप ने इस युद्ध को तानाशाही विरुद्ध लोकतंत्र की लड़ाई के रूप में प्रचारित किया है. दक्षिण एशिया के देशों ने तटस्थ रवैया अपनाया है. भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों पक्षों से शांति का आग्रह करते हुए कहा था कि यह युद्ध का युग नहीं है. इस युद्ध से रूस की अर्थव्यवस्था को आघात पहुंचा क्योंकि अमेरिका व पश्चिमी देशों ने रूस पर सैंक्शन या प्रतिबंध लगा दिए. भारत, चीन व ब्राजील रूस से अपने संबंधों में संतुलन बनाकर चल रहे हैं क्योंकि यह रूस के साथ ब्रिक्स संगठन के सदस्य हैं. यूक्रेन इस युद्ध को पश्चिमी देशों से मिले शस्त्रों से लड़ रहा है. अपना मनोबल कायम रखते हुए यूक्रेन ने रूस के सामने घुटने नहीं टेके हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

महाकौशल की डायरी

एक आदेश ने छुड़ाए अतिथियों के पसीने...

अविनाश दीक्षित

अतिथि शिक्षकों पर ई-अटेंडेंस का शिकंजा कसते ही विरोध के स्वर फूटने लगे हैं. इस बार खुद नहीं बल्कि अतिथि शिक्षकों ने अपना विरोध अतिथि शिक्षक समन्वय समिति व अन्य शिक्षक संगठनों के कंधे का सहारा लेकर जताया है. मामला हाल ही में मध्यप्रदेश के सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की नियमित उपस्थिति और शैक्षणिक व्यवस्था को

सुचारू बनाने से जुड़ा है जिसमें लोक शिक्षण संचालनालय ने सख्त कदम उठाते हुए एक ऐसा आदेश निकाल दिया जिसने जबलपुर सहित प्रदेश के अन्य जिलों के अतिथि शिक्षकों के पसीने छुड़वा दिए.

आदेश के मुताबिक अतिथि शिक्षक यदि लगातार सात दिनों तक अपनी ई-अटेंडेंस (ऑनलाइन उपस्थिति) दर्ज करने में विफल रहते हैं, तो उनकी सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दी जाएंगी. वहीं विभाग ने तर्क देकर स्पष्ट भी कर दिया है कि कई शिक्षक तकनीकी खामियों, नेटवर्क की समस्या या अन्य बहानों की आड़ में स्कूल से अनुपस्थित रह रहे थे. इसलिए सख्त कदम उठाया गया है जिससे बच्चों की पढ़ाई का नुकसान न हो सके. खबर है कि शिक्षक संगठनों ने लोक शिक्षण संचालनालय को चेतावनी दे डाली है कि नियमों में संशोधन नहीं किया गया तो पूरे प्रदेश भर के अतिथि शिक्षक लोकतांत्रिक तरीके से खुलकर सामने आएंगे और अपना विरोध दर्ज कराएंगे. शिक्षक संगठनों की मांग है कि सीधी सेवा समाप्ति के बजाय, आदेश में कारण बताओ नोटिस का प्रावधान अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए. अब यह देखना होगा कि शिक्षा विभाग इस विरोध के स्वर के बीच क्या बिगुल बजाता है.

जांच शुरू करने में क्यों की देरी?

जबलपुर में धान उपार्जन के दौरान हुई करोड़ों रुपए के घोटाले की प्रशासन द्वारा देरी से शुरू की गई जांच कटघरे में खड़ी होती नजर आ रही है. सवाल उठ रहे हैं कि जब घोटाले का पता लग गया था तो उसी वक्त जांच क्यों नहीं बैठाई गई? मामला ऐसे कई समूहों, समितियों और वेयरहाउस संचालकों से जुड़ा है जिन्हें प्रशासन द्वारा अधिग्रहित कर रखा गया था. कयास लगाए जा रहे हैं कि घटिया स्तर की धान को अच्छी धान बताकर सरकारी खजाने को घोटालेबाजों ने जमकर चपत लगाई है. खबर है कि जिले में धान उपार्जन की प्रक्रिया के दौरान सिहोरा, मझौली से लेकर शहपुरा, कुंडम और जबलपुर की सीमा तक फैले सैकड़ों वेयरहाउसों में से करीब 35 को विशेष रूप से जांच के दायरे में रखा गया है. चर्चाएं तो ये भी हैं कि जिन अधिकारियों को इन वेयरहाउसों की निगरानी के लिए तैनात किया गया था, वे ही धान माफिया के प्रभाव में आकर मूकदर्शक बने रहे. वहीं स्थानीय लोगों और किसान ये कहते भी नजर आ रहे हैं समय रहते कार्रवाई न होने से दोषियों को सबूत मिटाने का काफी समय मिल गया है.

पहले क्यों नहीं फ्लैग मार्च....

जबलपुर के सिहोरा में बीते दिनों भड़की हिंसा के बाद दल बल के साथ निकाले गए पुलिस फ्लैग मार्च ने क्षेत्र के लॉ एंड ऑर्डर पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है. हिंसा के बाद हालात सामान्य नजर आने लगे हैं लेकिन सिहोरा के हर एक वाशिंदे के मुंह से ये सुना गया कि आज तक के इतिहास में सिहोरा में ऐसा पुलिस ने फ्लैग मार्च नहीं निकाला जो अब निकाला गया. विदित हो कि आजाद चौक सिहोरा में हुई दो समुदाय के लोगों में हिंसा के बाद एसपी के नेतृत्व में ये पहला फ्लैग मार्च निकाला गया जो कि चर्चाओं के बाजार में प्रमुख रहा. आम चर्चाएं थीं कि पहले से ही लचर क़ानून व्यवस्था को लेकर पुलिस अधिकारी घटना के पहले सिहोरा में मुस्तैद होते तो शायद ये हिंसा नहीं होती और कई घर नहीं जलते. उधर रस्मअदायगी के लिए सिहोरा टीआई को थाने से हटाकर क्राइम ब्रांच भेजा गया है जिसको लेकर भी तरह तरह की बातें सार्वजनिक हुईं. इससे इतर एसडीओपी, डीएसपी अपने आप को खुशकिस्मत मान रहे हैं कि उन पर कोई कार्रवाई एसपी द्वारा सुनिश्चित नहीं की गई. दरअसल मामला दो समुदाय के बीच विवाद से जुड़ा था जिसने भोपाल तक अफसरों, मंत्रियों के खेमे में हड़कंप मचाया. लोग तो कह रहे हैं कि गनीमत है हालात दो दिन के अंदर ही काबू हो गए नहीं तो सिहोरा की हिंसा की चिंगारी कहीं जबलपुर तक पहुंचती तो मामला संभालना कठिन हो सकता था. चर्चाएं ये भी हैं कि पुलिस की मौजूदगी में सिहोरा में जिस तरह हिंसा भड़की है उससे अपराधियों, तत्वों में पुलिसिया खौफ न के बराबर है. इसकी बानगी हिंसा के दौरान स्पष्ट रूप से देखी गई. कुछ प्रत्यक्षदर्शियों ने तो ये तक बताया कि उपद्रव करने वालों ने पुलिस कर्मियों को भी दौड़ा दौड़ाकर डराया. सवाल ये खड़ा होता है कि जब पुलिस का रोड पर ये हाल है तो फिर आप आदमी अपने आप को कैसे महफूज समझ सकता है.

निशानेबाज

बीजेपी का राजाजी के प्रति प्रेम तमिलनाडु चुनाव के लिए गेम

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी का भारत के अंतिम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के प्रति प्रेम उमड़ पड़ा है, जिन्हें देशवासी 'राजाजी' कहा करते थे. महात्मा गांधी व नेहरू भी उनका बहुत सम्मान करते थे. 15 अगस्त 1947 को मिली आजादी के बाद भी भारत उपनिवेश था. लॉर्ड माउंटबेटन के जाने के बाद उनकी जगह राजाजी गवर्नर जनरल बनाए गए. 26 जनवरी 1950 को भारत सार्वभौम गणतंत्र बना, जिसके प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे. राजाजी बाद में मद्रास प्रांत (अब तमिलनाडु) के मुख्यमंत्री बन गए. राजाजी ने 1959 में रियासतों के राजा-महाराजाओं को साथ लेकर स्वतंत्र पार्टी बनाई थी और कांग्रेस के विरोध में उतर आए थे. वह समाजवाद के विरोधी और पूंजीवादी व्यवस्था के समर्थक थे. राष्ट्रपति भवन परिसर में राजाजी की प्रतिमा का अनावरण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने किया.'

हमने कहा, 'तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव होने जा रहा है. अचानक राजाजी के प्रति अपनत्व जताते हुए बीजेपी तमिल जनता को लुभाना चाहती है. इस पार्टी की रणनीति बड़ी सधी हुई रहती है और वह पूरी प्लानिंग के साथ कदम बढ़ाती है. प्रधानमंत्री ने तमिलों का मन जीतने के लिए काशी में तमिल संगमम का आयोजन करवाया. इसके बाद चोल वंश के राजाओं का राजदंड 'संगोल' लाकर संसद में स्थापित करवाया. यदि किस्मत ने साथ दिया तो बीजेपी तमिलनाडु में चुनाव जीतकर लुंगी डान्स करेगी.'

हमने कहा, 'यह इतना आसान नहीं है. तमिलनाडु में डीएमके का वर्चस्व है. वहां हिंदी विरोध की राजनीति चलती है और इसी आधार पर बीजेपी व केंद्र सरकार की नीतियों का विरोध किया जाता है. जयललिता के निधन के बाद एआईएडीएमके कमजोर हो चुकी है. बीजेपी वहां कैसे कदम जमाएगी?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज बीजेपी धीरे-धीरे अपना ग्राउंड बनाती है. उसका एआईएडीएमके से चुनाव समझौता रहा है. शीर्ष बीजेपी नेता संत तिरुवल्लूर व तमिल संस्कृति का गुणगान करेंगे. अपने चुनावी भाषणों की शुरुआत कुछ तमिल वाक्यों से करेंगे. वहां चुनावी सभाओं में चूड़ीदार पायजामे की बजाय लुंगी या वेष्टि पहनकर भाषण देंगे. बीजेपी की चुनावी मशीनरी हमेशा तैयार रहती है. अपनी चाल से विपक्ष को बेहाल करते हुए उसने देश के अधिकांश राज्यों में अपनी सरकार बना ली है. अब तमिलनाडु और बंगाल फतह करने का उसका सपना है. उसका सिस्टमैटिक गेम है. इसीलिए राजाजी के प्रति प्रेम है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12183

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■	8				
■	9	10		■	11		■
12	■		■	13	■	14	15
	■	16	17		18	■	
19	20			■	21	22	
23		■		■	24		
25			■	26			■

बाएं से दाएं

1. प्रकट होना, उत्पत्ति, अवतार (सं.) 4. रुप, शक्ल, कुरान का एक अध्याय (उर्दू) 7. पूर्णिमा, पूर्णिमा की रात (सं.) 8. लसयुक्त होना 9. वक्त, काल, मौका, अवसर 11. स्तुति-गीत (उर्दू) 14. छोटा, कम 16. नाज-नखरा 19. उस्तादी, प्राविण्य (उर्दू) 21. घर्षण 23. जल आदि के बहने या गिरने का क्रम 24. तोप बंदूक आदि का छोड़ना 25. निषेध, मना करने की क्रिया या भाव 26. जंगल, घर (सं.)

ऊपर से नीचे

1. लकड़ी काटने का एक दांतेदार यंत्र 2. फैलाव, बाढ़, खिलना 3. घेरा, चूड़ी (सं.) 4. ध्यानपूर्वक देखना / भाले से छेदना 5. पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक 6. वृक्ष का नीचे वाला भाग जिस पर डालियां नहीं होतीं 10. विनय, खुशामद 12. बैकुण्ठ, स्वर्ग 13. परिषद, गोष्ठी 15. बादलों का छा जाना 17. मातृभूमि (उर्दू) 18. देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना 20. पराजित होना 22. आकाश

Solution 12182

म	धु	■	म	ह	म	हा	ना
णि	■	म	द	र	सा	■	मं
कां	ति	■	न	म	न	■	जू
च	ल	नी	■	■	■	उ	र
न	ह	र	■	शि	क	स्त	■
■	न	■	■	शि	■	रा	गी
शा	■	■	पा	र	द	■	ति
प	रा	भू	त	■	श	ला	का

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों और भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, मान प्रतिष्ठा बढेगी, वाहन का सुख मिलेगा, राजनैतिक क्षेत्र में वृद्धि होगी, धन संकट का सामना करना पडेगा, शिक्षा में व्यवधान आयेगा, वर्ष के अन्त में व्यापार में प्रगति होगी, कार्यप्रणाली लेखन और साहस में सफलता मिलेगी, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा, राजनैतिक कार्यो में असुविधाओं का सामना करना पडेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को लेखन अध्ययन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पराक्रम का सामना करना होगा, मकर ओर कुंभ राशि के व्यक्तियों का कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को जायजाद संबंधी कार्यो में परेशानी होगी, मतभेदों में वृद्धि होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, दुबला पतला किन्तु लम्बे कद का होगा, इनकी शिक्षा अच्छी होती है, लेखन अध्ययन कार्य में सफलता मिलेगी, आय के एक से अधिक साधन रहेगें, नौकरी में सफलता प्राप्त होगी, दायित्वों की पूर्ति होगी, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- तरक्की का अवसर है, जिसे आप चाहते हैं उससे मन की बात कह दें, नौकरी में सफलता प्राप्त होगी, शुभ समाचार मिलने का योग है.

वृषभ- अनुभवी लोगों का साथ सुखद रहेगा, कार्यो को इच्छित सफलता प्राप्त होगी, सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा, राजकीय सहयोग से शत्रु बाधा दूर होगी.

मिथुन- घरेलू कार्य पूरा करने में व्यस्त रहेगे, कार्य स्थल पर माहौल अनुकूल रहेगा, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, सामाजिक कार्यो में रूचि रहेगी.

कर्क- बातचीत में सावधानी रखें, धैर्य से काम लें, अनावश्यक खर्च से चिन्ता होगी, किसी उत्सव आदि में शामिल होने का योग है, मनोरंजन के कार्यो में सफलता मिलेगी.

सिंह- जीवनसाथी की भावनाओं पर ध्यान दे, पुराना विवाद पक्ष में सुलझेगा, पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें.

कन्या- योजना लागू करने का सही समय है, नये संपर्को से लाभ होगा, आकस्मिक धन लाभ का योग है, पारिवारिक कार्यो में सफलता मिलेगी.

तुला- जीवनसाथी की मदद से मुश्किल राह आसान होगी, बुजुर्गों का ध्यान रखें, सुख, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति हो सकती है, प्रवास का योग है.

वृश्चिक- सामाजिक जीवन में बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी, प्रियजन की मुलाकात सुखद रहेगी, शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति होगी, जधनु जायजाद का सुख मिलेगी.

धनु- आफिस की परेशानी से कार्य प्रभावित होगा, आवेश में फैसला गलत होगा, विरोधी पक्ष के कारण थोड़ी परेशानी हो सकती है.

मकर- मित्रों के साथ समय मौजमस्ती में बीतेगा, माता पिता से सहयोग मिलेगा, पारिवारिक जीवन सुखद एवं आनंददायक रहेगा, लाभ का योग है.

कुम्भ- भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी, प्रियजन की मदद से कार्य पूरे होगें, लंबित कार्यो को पूरा करना ही हितकर रहेगा, अनावश्यक व्ययभार न बढ़ायें.

मीन- मधुरवाणीं से सबका दिल जीत लेगें, प्रापर्टी का विवाद हल होगा, धार्मिक कार्यों में यश, सम्मान मिलेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

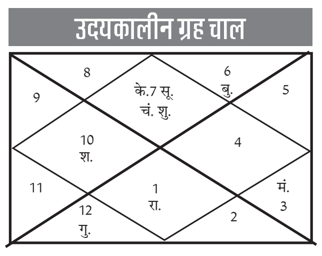

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल एकादशी भृगुवासरे रात 9/58, आर्द्रा नक्षत्रे दिन 10/29, आयुष्मान योगे रात 7/34, वणिज करणे सू.उ. 6/16, सू.अ. 5/44, चन्द्रचार मिथुन रात 3/30 से कर्क, पर्व- आमलकी एकादशी व्रत, रंगभरी एकादशी, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल एकादशी को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, नारियल, सुपारी, मेवा, सोना, चांदी, लोहा, तांबा व शेयर के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 2499 है.

SUDOKU 7315

		8			4			
1								9
3				2			5	
			1				8	
		5				4		
	7				9			
	6			3				2
9								1
			8			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7314

6	3	8	5	2	1	4	7	9
7	9	1	4	6	3	5	8	2
2	4	5	7	9	8	6	3	1
9	1	3	2	5	4	8	6	7
4	6	2	8	1	7	9	5	3
5	8	7	6	3	9	1	2	4
3	2	4	1	8	5	7	9	6
8	7	6	9	4	2	3	1	5
1	5	9	3	7	6	2	4	8